B- 4

L- 4

दिनाँक
20/01/24

बंगाल विजय

प्लासी का युद्ध :- 23 जून 1757

ईस्ट इण्डिया कम्पनी (क्लाइव और बंगाल के नवाब)

कारण :-

- अंग्रेजों की महत्वकांक्षा द्वितीय कर्नाटक युद्ध के पश्चात् विशेषकर।
- विस्तार के अनुकूल किसी भी परिस्थितियों को हाथ से जाने देना नही चाहते थे।
- 1756 ई॰ में सिराज उद दौला बंगाल का नवाब बना।
- उसके कुछ संबंधियों ने विरोध किया।
जैसे (शौकत गंज, घसीटी बेगम) आदि।
- इन विरोधियों को अंग्रेजो ने संरक्षण प्रदान किया।
- कलकत्ता की किलेबंदी की।
- भारतीय व्यापारियों पर कलकत्ता में कर लगाया।
- नवाब ने 1756 ई॰ में कलकत्ता की जिम्मेदारी मानिकचंद नामक अधिकारी को सौंपी।

Note :-

- कुछ ब्रिटिश अधिकारियों ने Fulta द्वीप में शरण ली।
- नवाब ने कलकत्ता का नाम अलीनगर रखा।
- इसी सन्दर्भ में काल कोठरी नामक घटना का उल्लेख किया गया

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

• अंग्रेजो ने इस घटना को केन्द्र में रखकर प्रतिशोध की माँग की।

• यह घटना 'हालविल' नामक अधिकारी के दिमाग की उपज मानी जाती है।

• क्लाइव ने बिना युद्ध के कलकत्ता पर नियंत्रण कर लिया।

* मानिकचंद को लालच देकर मिला लिया

• क्लाइव ने सिराज के अधिकारियों के साथ मिलकर नवाब को हटाने का षणयंत्र रचा।
जैसे- मीर जाफर, राय दुर्लभ, खादिम खान, अमीचंद

• नवाब के युद्ध पूर्व बंगाल में फ्रांसीसी बस्ती चन्द्रनगर पर भी क्लाइव ने कब्जा किया।

• फ्रांसीसी नवाब की कोई सहायता न दे सके।

• जून 1757 में दोनों की सेनाओं में छोटी झड़प हुई और सिराज-उद्-दौला की पराजय हुई।

Note :-

• मीर जाफर को नवाब बनाया गया।

• अंग्रेजों को एक बड़ी राशि उपहार एवं मुआवजे के रूप में दी।

• चौबीस परगना की जमींदारी भी अंग्रेजों को दी।

• कम्पनी के व्यापारियों एवं कर्मचारियों को निजी व्यापार पर कर न देनें की सुविधा प्रदान की गई।

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform KHAN SIR

अंग्रेजों की दृष्टि से प्लासी लड़ाई का महत्व :-

आर्थिक महत्व :-

- कम्पनी के कर्मचारियों को विशेष व्यापारिक सुविधाएं दी गईं।
- एक बड़ी राशी उपहार एवं मुआवजे के रूप में मिली।
- बंगाल से प्राप्त धन या संसाधनों का प्रयोग भारतीय वस्तुओं को खरीदने एवं साम्राज्य विस्तार के लिए किया गया।

राजनैतिक महत्व :-

- बंगाल के प्रशासन एवं अधिकारियों की नियुक्ति में कम्पनी का हस्तक्षेप।
- बंगाल में कम्पनी को व्यापारिक शक्ति के साथ साथ राजनीतिक शक्ति के रूप में देखा जाने लगा।
- कम्पनी की महत्वाकांक्षा बढ़ी, अवसर मिलने पर साम्राज्य विस्तार के लिए कदम उठाए।

अंग्रेजों की सफलता के कारण :-

- योग्य नेतृत्व
- बेहतर नौसेना
- आधुनिक हथियारों का प्रयोग जैसे हल्के तोप और बंदूक
- राष्ट्रीय चेतना का अभाव
- अंग्रेजों की क्षमता को कम आंकना।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

Note :-

- 1760 में अंग्रेजों ने मीरजाफर को हटाकर मीरकासिम को नवाब बनाया।
- मीर कासिम ने अंग्रेजों को वर्धमान, मिदनापुर एवं चटगाँव की जमींदारी दी।

बक्सर का युद्ध - Oct 1764

ईस्ट इण्डिया कम्पनी और हेक्टर मुनरो

बंगाल — मीर कासिम
अवध — शुजाउद्दौला
मुगल — शाहआलम II

कारण :-

कम्पनी एवं मीर कासिम की महत्वाकांक्षा :-

- कम्पनी मीरकासिम को कठपुतली शासक के रूप में रखना चाहती थी।
- मीर कासिम ने कुछ ऐसे कदम उठाए जिसे अंग्रेजों ने खतरे के रूप में देखा।

जैसे - मुर्शिदाबाद के स्थान पर मुंगेर को राजधानी बनाना।
मुंगेर में बंदूक बनाने का कारखाना लगाना।

- व्यापारी कर को लेकर कासिम एवं अंग्रेजों के बीच विवाद हुआ।
- इसी मुद्दे को लेकर युद्ध की शुरुआत हुई और अंग्रेजों को सफलता मिली।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

युद्ध के पश्चात की गई संधियाँ :-

(1) बंगाल :-

- युद्ध से पूर्व ही अंग्रेजों ने मीर जाफर को नवाब बना दिया था।
- फरवरी 1765 में नवाब से सन्धि की गई जिसमें यह प्रावधान था कि नवाब प्रशासनिक कार्य नायब सूबेदार की सलाह से करेंगे और इसकी नियुक्ति अंग्रेजों के द्वारा की जायेगी।

2. मुगल शासक के साथ इलाहाबाद की सन्धि - Aug 1765

- मुगल शासक ने कम्पनी को बंगाल, बिहार, उड़ीसा की दिवानी का अधिकार दिया।
- इसके बदले कम्पनी ने मुगल शासक को वार्षिक पेंशन तथा कोरा एवं इलाहाबाद का क्षेत्र दिया।

3. अवध से इलाहाबाद की सन्धि :- Aug 1765

- अवध की सुरक्षा की जिम्मेदारी कम्पनी पर होगी और इसके लिए धन अवध को देना होगा।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR